

DR. MAMMEN CHANDY

Dr. Mammen Chandy is the Director of the Tata Medical Center in Kolkata which is now one of the leading cancer hospitals in India serving the people of Eastern India. Dr Chandy is widely recognized for his contribution to developing Clinical Haematology services in India. The first post graduate MCI approved super specialty training program (DM) in the subject was started under his leadership at the Christian Medical College Vellore.

2. Born on 30th August 1949, Dr Chandy obtained his MBBS from the Christian Medical College, Vellore in 1971 and MD in Internal Medicine from the same institution in 1978. He won the Madras University Gold Medal for both MBBS and MD. He was awarded the FRACP and the FRCPA from the College of Physicians and Pathologists of Australia in 1985, after completing training in hematology at the Westmead Center in Sydney, Australia. He was awarded the FRCP of the Royal College of Physicians, London in 2010.

3. After returning to CMC Vellore in 1983, he was instrumental in developing a world class clinical haematology department offering diagnosis and treatment for a wide range of blood disorders from thalassemia to leukemia. With assistance from the Department of Biotechnology, Government of India. He was able to start molecular diagnosis for many inherited and acquired blood disorders and provide antenatal diagnosis. Under his leadership a PhD program was started and research in many haematological disorders was initiated and many papers published in leading international journals.

4. Dr Chandy was responsible for starting the Bone Marrow Transplant program at CMC Vellore and this centre is now the largest program In India. In 1991, the first successful bone marrow transplant for thalassemia was done in CMC Vellore and the first matched unrelated donor stem cell transplants in India was done in 2008, using a stem cell donor from the National Donor Marrow program, USA. He was the (CIBMTR) 2014 Distinguished Service Award Recipient. This award recognizes individuals who have partnered with the International Centre for Bone Marrow Transplantation Research in its stem cell transplant research mission by promoting research in developing countries, advancing the field despite unique challenges, establishing an outstanding transplant program or a national registry that reports outcome data to the CIBMTR.

5. Dr Chandy has been the Chair of many committees of the Indian Council of Medical Research in the field of Stem Cells and the Department of Biotechnology in Molecular Genetics and has numerous publications in peer reviewed national and international journals.

6. Dr Chandy is the recipient of gold medals in medicine, surgery, paediatrics, obstetrics and gynaecology and was the best outgoing student of his batch for MBBS. He was awarded the Manorama Sapre Oration, Indian Society of Haematology and Blood Transfusion in 1993, Bhatia Oration, Institute of Immunohaematology in 1997, Dr B. N. Dara Award for outstanding contribution to Thalassemia in India 1997, Ranbaxy Research Award 2003 in the field of "Medical Science – Clinical Research", and the B.C. Roy Award by the Medical Council of India in the category of Eminent Medical Person for the Year 2008. In 2018 he was conferred an honorary DSc. by the Jadavpur University.

7. Dr Chandy's achievements are many but most importantly he is recognized for his passion and commitment to haematology and for being a wonderful humane physician and articulate teacher.

पद्म श्री

डॉ. मामेन चाँडी



डॉ. मामेन चाँडी कोलकाता में टाटा मेडिकल सेंटर के निदेशक हैं जो पूर्वी भारत के लोगों की सेवारत भारत का एक अग्रणी कैंसर अस्पताल है। आप भारत में नैदानिक रूधिर विज्ञान सेवाओं को विकसित करने में अपने योगदान के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं। इस विषय पर भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद द्वारा अनुमोदित प्रथम स्नातकोत्तर सुपर स्पेशलिटी प्रशिक्षण कार्यक्रम (डीएम) आपके नेतृत्व में क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज वेल्लोर में आरंभ किया गया था।

2. आपका जन्म दिनांक 30 अगस्त, 1949 में हुआ था। आपने वर्ष 1971 में क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर से एमबीबीएस तथा वर्ष 1978 में उसी संस्थान से इन्टर्नल मेडिसिन में एमडी. की डिग्री प्राप्त की। आपने एमबीबीएस और एमडी. दोनों के लिए मद्रास विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक जीता। सिडनी, आस्ट्रेलिया में वेस्टमिड सेंटर में रूधिर विज्ञान में प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, आपको वर्ष 1985 में आस्ट्रेलिया के कॉलेज ऑफ फिजिशियन्स एंड पैथेलॉजिस्ट से एफआरएसीपी तथा एफआरसीपीए प्रदान किया गया। आपको वर्ष 2010 में रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन, लंदन के एफआरसीपी से नवाज़ा गया।

3. वर्ष 1983 में सीएमसी, वेल्लोर लौटने के बाद, आपने विश्व स्तरीय नैदानिक रूधिर विज्ञान विभाग विकसित करने में अहम भूमिका निभायी जो थैलेसिमिया से लेकर ल्यूकेमिया तक के कई रक्त विकारों का निदान और उपचार प्रदान करता है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की सहायता से, आप कई वंशानुगत एवं एक्वायर्ड रक्त विकारों के लिए आणविक निदान प्रदान करने तथा प्रसव पूर्व निदान प्रदान करने में कामयाब रहे। आपके नेतृत्व में पीएच.डी. कार्यक्रम आरंभ किया गया तथा रूधिर विज्ञान संबंधी कई विकारों में अनुसंधान शुरू किया गया और इस संबंध में प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय जनरलों में कई शोध-पत्र प्रकाशित किए गए।

4. आप सीएमसी, वेल्लोर में अस्थि-मज्जा प्रत्यारोपण कार्यक्रम आरंभ करने के लिए अहम योगदान दिया है और यह केन्द्र अब भारत में सबसे बड़ा कार्यक्रम है। वर्ष 1991 में थैलिसिमिया के लिए प्रथम सफल अस्थि-मज्जा प्रत्यारोपण सीएमसी, वेल्लोर में किया गया तथा नेशनल डोनर मैरो प्रोग्राम यूएसए से स्टेम सेल डोनर का प्रयोग करके वर्ष 2008 में भारत में प्रथम मैच्ड अनरिलेटेड डोनर स्टेम सेल ट्रांसप्लांट किया गया। आपको वर्ष 2014 का विशिष्ट सेवा पुरस्कार (सीआईबीएमटीआर) मिला। इस पुरस्कार से ऐसे व्यक्तियों को सम्मानित किया जाता है जिन्होंने विकासशील देशों में अनुसंधान को बढ़ावा देकर, विशिष्ट चुनौतियों के बावजूद इस क्षेत्र में उन्नति करके, उत्कृष्ट प्रत्यार्पण कार्यक्रम या राष्ट्रीय रजिस्ट्री, जो सीआईबीएमटीआर को आउटकम डाटा की सूचना देता है, स्थापित करके स्टेम सेल प्रत्यारोपण अनुसंधान मिशन में इनटरनेशनल सेंटर फॉर बॉर्न मेरो ट्रांसप्लांटेशन रिसर्च के साथ मिलकर कार्य किया हो।

5. आप स्टेम सेल के क्षेत्र में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की कई समितियों तथा डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी इन मोलक्यूलर जेनेटिक्स विभाग के अध्यक्ष रहे हैं और समकक्षों द्वारा समीक्षा किए गए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में आपके कई प्रकाशन छपे हैं।

6. आपको मेडिसिन, सर्जरी, बाल रोग विज्ञान, प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान में स्वर्ण पदक मिले हैं और आप एमबीबीएस के लिए अपने बैच के सर्वश्रेष्ठ निवर्तमान छात्र रहे हैं। आपको वर्ष 1993 में मनोरमा सप्रे ओरेशन, इंडियन सोसायटी ऑफ हेमेटोलॉजी एंड ब्लड ट्रांसफ्लूजन, वर्ष 1997 में भाटिया ओरेशन, इंस्टीच्यूट ऑफ इमिनोहेमोटोलॉजी, वर्ष 1997 में भारत में थलेसिमिया से निपटने में उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. बी.एन. दारा पुरस्कार, "मेडिकल साइंस-क्लिनिकल रिसर्च" के क्षेत्र में रैनबैक्सी रिसर्च अवार्ड 2003 तथा वर्ष 2008 के लिए विख्यात चिकित्सक की श्रेणी में भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद का बी.सी. रॉय अवार्ड मिला है। वर्ष 2018 में आपको जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान के रूप में डीएससी की डिग्री प्रदान की गई।

7. आपकी कई उपलब्धियां हैं किंतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि आप रूधिर विज्ञान के प्रति अपनी रूचि और प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं। आप अद्भुत विचारशील फिजिशियन तथा कुशल शिक्षक के रूप में भी जाने जाते हैं।